Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

3. बाबरी विध्वंस : मीडिया कवरेज का बांग्लादेशी समाज पर पड़े प्रभाव और 'लज्जा' का तुलनात्मक अध्ययन

अभिजीत सिंह
शोधार्थी, मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार।
Email- abhijeetggv@gmail.com
डॉ परमात्मा कुमार मिश्रा
सहायक प्राध्यापक, मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार।

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में राम जन्मभूमि आंदोलन के मीडिया कवरेज का बांग्लादेशी समाज पर पड़े प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन तस्लीमा नसरीन के उपन्यास 'लज्जा' के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में एक मिश्रित-विधि दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें इंटरनेट से प्राप्त बाबरी विध्वंस से संबंधित समाचार लेखों और अन्य शोध कार्यों से प्राप्त द्वितीयक डेटा का विश्लेषण किया गया है। साथ ही तस्लीमा नसरीन के उपन्यास 'लज्जा' का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन मीडिया फ्रेमिंग सिद्धांत और वैश्विक मीडिया प्रभावों पर आधारित है, जिसमें इस बात की पड़ताल की गई है कि कैसे मीडिया कवरेज जनता की धारणाओं को निर्माण करते हैं और सामाजिक परिवेश को प्रभावित करते हैं। इसके परिणाम बताते हैं कि मीडिया के कवरेज में अकसर पक्षपातपूर्ण कवरेज मौजूद था, जिसमें मुख्य रूप से संघर्ष और हिंसा को दर्शाया गया और ऐतिहासिक संदर्भ और जटिलताओं को नज़रअंदाज़ किया गया। इसके कारण बांग्लादेशी समाज में व्याप्त ध्रुवीकरण और सामाजिक तनावों को बढ़ा दिया गया, धार्मिक अल्पसंख्यकों की उनकी सुरक्षा को लेकर डर पैदा कर दिया।

तसलीमा नसरीन की लज्जा मुख्यधारा मीडिया के प्रस्तुतीकरण का प्रतिवाद करती है, जो धार्मिक हिंसा के पीड़ितों की मानवीय क्षति और व्यक्तियों एवं समुदायों पर इसके विनाशकारी प्रभावों का पक्षपातपूर्ण चित्रण करता है। किताब की विषयवस्तु और शैली का विश्लेषण करते हुए, यह अध्ययन वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए मीडिया द्वारा फैलाए जा रहे धारणाओं को चुनौती देने की साहित्य की क्षमता को दर्शाता है।

तुलनात्मक विश्लेषण मीडिया कवरेज और नसरीन के 'लज्जा' के बीच अभिसरण और विचलन दोनों बिंदुओं को उजागर करता है। जहां दोनों इस आंदोलन से उत्पन्न हिंसा और पीड़ा को स्वीकार करते हैं, वहीं नसरीन व्यक्तिगत अनुभवों और भावनात्मक नुकसान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानव पीड़ा की गहरी समझ प्राप्त होती है।

यह शोध, घटनाओं के तात्कालिक संदर्भ से परे, समाजों में धारणाओं को आकार देने और सामाजिक परिवेश को प्रभावित करने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करता है। यह मीडिया की प्रस्तुतियों के साथ आलोचनात्मक

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जुड़ाव की आवश्यकता पर बल देता है और समझ को बढ़ावा देने और अंतर-धार्मिक सद्भाव को मजबूत करने में विभिन्न दृष्टिकोणों के महत्व को स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्द: राम जन्मभूमि आंदोलन, मीडिया साक्षरता, मीडिया फ्रेमिंग, वैश्विक मीडिया प्रभाव, बांग्लादेशी समाज, तस्लीमा नसरीन, लज्जा, सांप्रदायिक तनाव, धार्मिक अल्पसंख्यक

प्रस्तावना:

राम जन्मभूमि आंदोलन, जो 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी के प्रारंभ में भारत में चला एक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन था, जिसके दूरगामी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिणाम हुए। इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण पहलू पड़ोसी देशों पर बांग्लादेश पर पड़ा इसका प्रभाव था। बांग्लादेश में 1947 के विभाजन के बाद से ही सांप्रदायिक तनाव मौजूद थे, और राम जन्मभूमि आंदोलन ने इन जनाक्रोश को भड़का दिया। जिससे हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच हिंसा हुई। इस हिंसा ने बांग्लादेश में रहने वाले हिंदुओं की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया और उन्हें डर के माहौल में जीने के लिए मजबूर कर दिया। इस आंदोलन का प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है, और दोनों देशों के बीच संबंधों को प्रभावित करता है।

यह शोध राम जन्मभूमि आंदोलन के बारे में अंतरराष्ट्रीय मीडिया में क्या बताया गया और इसका बांग्लादेशी समाज पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका अध्ययन करता है। यह जानने की कोशिश करता है कि भारत में घटी घटना का मीडिया ने मुद्दे को कैसे दिखाया और इससे बांग्लादेशी लोगों की राय कैसे बनी। आंदोलन से जुड़ी हिंसा और सांप्रदायिक तनाव की खबरें बांग्लादेश भी पहुंचीं, जिससे वहां पहले से मौजूद सांप्रदायिक मतभेद बढ़ गए और हिंदूओं के प्रति मुस्लिम समुदायों के बीच अविश्वास बढ़ गया।

यह अध्ययन इस बात की भी जांच करता है कि कैसे बांग्लादेशी मीडिया ने अंतरराष्ट्रीय मीडिया द्वारा प्रस्तुत भारत-बांग्लादेश संबंधों के बारे में कवरेज को अपनाया और उसका इस्तेमाल किया। इससे यह पता चल सकता है कि भारत में घटी घटना को कवर करने वाली मीडिया के फ्रेमवर्क को बांग्लादेशी मीडिया द्वारा किस हद तक अपनाया या उसे किस तरह से बदला गया। शोध यह भी विश्लेषण करता है कि किस प्रकार बांग्लादेश की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को मीडिया के कवरेज ने आकार दिया और समाज द्वारा उसकी क्या प्रतिक्रिया दी गई।

यह अध्ययन केवल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण नहीं करता है, बल्कि यह तस्लीमा नसरीन के विवादास्पद उपन्यास "लज्जा" की भूमिका को देखता है। "लज्जा" को एक अलग तरह की कहानी के रूप में देखा जाता है जो बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के अनुभवों को उजागर करता है और मुख्यधारा के मीडिया द्वारा प्रस्तुत छवियों को चुनौती देता है। यह उपन्यास सांप्रदायिक सद्भाव और बहुसंस्कृतिवाद के महत्व पर बल देता है, जो बांग्लादेश के राष्ट्रीय धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह शोध मीडिया कवरेज और "लज्जा" जैसे साहित्यिक कार्यों के बीच जटिल संबंधों का अध्ययन करता है। यह दर्शाता है कि कैसे ये सभी कारक बांग्लादेशी समाज में धार्मिक अस्मिता और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं।

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि मीडिया लोगों की सोच और राय को कैसे प्रभावित करता है। मीडिया, चाहे वह समाचार, मनोरंजन या सोशल मीडिया हो, लोगों की धारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राम

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जन्मभूमि आंदोलन के दौरान, मीडिया कवरेज पक्षपाती और सनसनीखेज था। इस वजह से बांग्लादेश में गलतफहमी पैदा हुई और लोगों में चिंता बढ़ गई। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि जटिल सामाजिक-धार्मिक मुद्दों को समझने के लिए हमें आलोचनात्मक सोच और विभिन्न दृष्टिकोणों की आवश्यकता है।

इस शोध का उद्देश्य 90 के दशक में बांग्लादेश में सामाजिक धारणाओं को समझना है। इसे प्राप्त करने के लिए, अंतरराष्ट्रीय मीडिया के चित्रणों का विश्लेषण कर, बांग्लादेशी समाज पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया गया है। और तस्लीमा नसरीन का उपन्यास "लज्जा" कैसे प्रमुख आख्यानों को चुनौती देता है और एक शक्तिशाली प्रति-दृष्टिकोण प्रदान करता है, इसकी जांच की गई है।

यह अध्ययन केवल घटनाओं के वर्णन से इतर यह उन जटिल कारकों को उजागर किया है जो इस अवधि के दौरान बांग्लादेश में सामाजिक धारणाओं को आकार देते थे। जिसमें मीडिया कवरेज, साहित्यिक कृतियों का प्रभाव और सामाजिक-राजनीतिक माहौल भी शामिल हैं। शोध इस बात पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है कि "लज्जा" जैसे रचनात्मक हस्तक्षेप सांप्रदायिक सद्भाव को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं और वैश्विक मुद्दों को समझने के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण कैसे प्रदान कर सकते हैं।

साहित्य पुनरावलोकन:

अंतर्राष्ट्रीय मीडिया वैश्विक परिदृश्य में एक अत्यंत प्रभावशाली शक्ति है। यह दुनिया भर की घटनाओं के बारे में जनता की राय को प्रभावित करने और उनकी समझ को आकार देने में सक्षम है। रॉबिन्सन और सरेबर्नी-मोहम्मदी (1992) के अनुसार, इसका प्रभाव सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों सहित विभिन्न मुद्दों तक फैला हुआ है। भौगोलिक रूप से दूरस्थ स्थानों में रहने वाले लोगों के लिए, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया कवरेज अकसर दुनिया की घटनाओं के बारे में जानकारी का प्राथमिक स्रोत होता है। यह कवरेज उनकी धारणाओं और उन घटनाओं की समझ को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है जिनके बारे में वे जानकारी प्राप्त कर रहे हैं (मैकमैनस, 1994)।

मीडिया का उपयोग करते समय सावधानी बरतना ज़रूरी है क्योंकि प्रस्तुत जानकारी हमेशा पूरी तरह से निष्पक्ष नहीं हो सकती है। शूमकर और रीज़ (1996) के अनुसार, यह जानकारी कई चीज़ों से प्रभावित हो सकती है, जैसे कि बाज़ार की ताकत, राजनीतिक एजेंडे, और पत्रकारों का अपना नज़रिया भी। इन चीज़ों का असर यह हो सकता है कि खबरों को थोड़ा ज़्यादा रोचक बनाने के लिए तथ्यों को थोड़ा बदल दिया जाए या किसी खास नज़रिए को आगे बढ़ाने के लिए कुछ जानकारी छुपा दी जाए। इसलिए, यह ज़रूरी है कि आप खबरों के स्रोतों की जांच करें और अलग-अलग समाचार माध्यमों से जानकारी प्राप्त करें ताकि आपको वैश्विक घटनाओं की पूरी तस्वीर मिल सके।

अनुसंधानकर्ता यह समझने का प्रयास करते हैं कि मीडिया सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के बारे में लोगों की धारणाओं को कैसे प्रभावित करता है, खासकर उन आंदोलनों के लिए जो उनके अपने क्षेत्र से दूर होते हैं। थुसु (2007) का तर्क है कि मीडिया अकसर घटनाओं के जटिल पहलुओं और ऐतिहासिक संदर्भ को नजरअंदाज करते हुए संघर्ष और हिंसा पर ध्यान केंद्रित करता है। सनसनीखेज रिपोर्टिंग उपभोग करने वाले को भ्रमित करती है और पूर्वग्रह को बढ़ावा देती है। उदाहरण के लिए, किसी आंदोलन के हिंसक विरोध प्रदर्शनों को बार-बार दिखाया जा सकता है, जबकि आंदोलन के मूल कारणों और उनके द्वारा अपनाई जाने वाली शांतिपूर्ण रणनीतियों को अनदेखा किया जा सकता है। इस तरह के

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

असंतुलित कवरेज से उपयोगकर्ताओं की यह धारणा बन सकती है कि आंदोलन पूरी तरह से हिंसक है, जबकि वास्तविकता अधिक जटिल हो सकती है।

मीडिया जब सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों को प्रदर्शित करती है, तो वैचारिक पूर्वाग्रह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसका मतलब है कि इसका मतलब है कि पत्रकारों की अपनी सोच और संस्कृति जाने-अनजाने में रिपोर्टिंग को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी पत्रकार एक आंदोलन को पश्चिमी मूल्यों के अनुरूप प्रगतिशील मान सकता है, जबकि स्थानीय लोग इसे परंपरा का अपमान समझ सकते हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि पश्चिमी संस्कृति व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता को महत्व देती है, जबकि कई अन्य संस्कृतियां समुदाय और परंपरा को महत्व देती हैं। अतः, मीडिया की रिपोर्टिंग का सूचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए विश्लेषण करना ज़रूरी है। खासकर सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के कवरेज के मामले में। उपयोगकर्ताओं को विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और प्रस्तुत किए जा रहे आख्यान पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

मीडिया कवरेज लोगों को केवल घटनाओं के बारे में सूचित करने से कहीं अधिक प्रभाव डालता है। यह सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करता है और समाज में पहले से मौजूद तनावों को बढ़ाता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ विभिन्न धार्मिक और जातीय समुदाय रहते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि मध्य पूर्व में घटनाओं के मीडिया कवरेज ने यूरोपीय समाजों में इस्लाम और मुसलमानों के प्रति दृष्टिकोण और धारणाओं को प्रभावित किया है (एस्सेड, 1994)। इसी तरह, राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान बांग्लादेश में मीडिया में इसका चित्रण धार्मिक अल्पसंख्यकों के बीच चिंता का कारण बना, जिससे संभावित रूप से सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया (रहमान, 2003)।

इन अध्ययनों से पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया में सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों को कैसे चित्रित किया जाता है, इस बात के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। इन रिपोर्टों द्वारा बोए गए सूचना-बीज से रूढ़िवादिता मजबूत हो सकती है और विभिन्न समुदायों के बीच विभाजन बढ़ सकता है। यह स्पष्ट करता है कि मीडिया को अत्यधिक जिम्मेदारी के साथ काम करना चाहिए। उन्हें ऐसे विषयों को प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए जो सटीक हों, भड़काऊ भाषा के प्रयोग से बचें, और विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करें।

तस्लीमा नसरीन का उपन्यास 'लज्जा' सांप्रदायिक हिंसा की क्रूरता को उजागर करता है। यह उपन्यास बाबरी विध्वंस के बाद बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदूओं के प्रति हुए संहार से प्रेरित है। जिसमें गंभीर धार्मिक उथल-पुथल के दौर में एक हिंदू परिवार के संघर्षों को दर्शाता है। नसरीन का लेखन सांप्रदायिक हिंसा की वास्तविकता को बिना किसी लाग-लपेट के प्रस्तुत करता है। यह हमें उन कठोर सच्चाइयों से अवगत कराता है जिन्हें अकसर छुपा दिया जाता है। 'लज्जा' ने बांग्लादेश जैसे देशों में विवादों और प्रतिबंधों का भी सामना किया है, क्योंकि यह संवेदनशील धार्मिक मुद्दों पर समाज की सच्चाई को खुलकर विश्व के पटल पर उठाता है।

विभिन्न साहित्यिक विश्लेषकों ने 'लज्जा' की कहानी के माध्यम से सांप्रदायिक तनाव, धार्मिक पहचान और हाशिए पर पड़े समुदायों के जीवन में उत्पन्न चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। 'लज्जा' समाज में मौजूद उन दमनकारी विचारधाराओं के विरुद्ध एक प्रतिरोध की आवाज़ बनकर उभरता है। यह उपन्यास मुख्यधारा के मीडिया द्वारा बनाए गए विमर्श के विपरीत जटिल सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की बारीकियों और अलग-अलग पहलुओं को सामने लाता है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सांप्रदायिक दंगों और धार्मिक संघर्ष की पृष्ठभूमि में लिखा गया 'लज्जा' मानवीय पीड़ा और सहनशीलता को एक ऐसे प्रभावी रूप में प्रस्तुत करता है जो पढ़ने वाले के मन पर एक गहरी छाप छोड़ने में सक्षम है। यह उपन्यास हमें सांप्रदायिक हिंसा की भयावहता के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। और हमें एक बेहतर समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है।

शोध विधि:

यह शोध मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करता है, जिसमें द्वितीयक डेटा विश्लेषण और साहित्य के आलोचनात्मक विश्लेषण शामिल हैं।

बांग्लादेश में बाबरी विध्वंस के बाद हुए सांप्रदायिक दंगों से संबंधित ऑनलाइन उपलब्ध समाचार लेखों का विश्लेषण किया गया है। इसमें विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने वाले समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की खबरें शामिल हैं। इसके लिए बांग्लादेश, बाबरी मस्जिद, राम मंदिर, लज्जा जैसे मुख्य शब्दों के आधार पर खोजा गया है। आंदोलन पर केंद्रित शैक्षणिक पत्रिकाओं और विद्वानों के कार्यों, बांग्लादेश पर इसके प्रभाव, और सांप्रदायिक तनावों और धार्मिक अल्पसंख्यकों जैसे संबंधित मुद्दों की समीक्षा की गई।

साथ ही तस्लीमा नसरीन का उपन्यास 'लज्जा' जैसे साहित्यिक कार्यों का विश्लेषण सांप्रदायिक हिंसा के सामाजिक और मानवीय प्रभावों को समझने के लिए किया गया है। 'लज्जा' में मौजूद सांप्रदायिक तनाव, धार्मिक अस्मिता और हाशिए पर पड़े समुदायों जैसे विषयों से संबंधित शैक्षणिक लेखों का विश्लेषण किया गया है।

यह मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण शोधकर्ता को राम जन्मभूमि आंदोलन के मीडिया कवरेज का व्यापक मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, यह साहित्यिक और अकादमिक कार्यों के आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से इस आंदोलन के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की गहरी समझ प्रदान करता है।

साहित्य का आलोचनात्मक विश्लेषण:

यह लेख तस्लीमा नसरीन के उपन्यास 'लज्जा' का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें उपन्यास के मुख्य विषयों, पात्रों और कहानी की संरचना का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह समझने का प्रयास किया गया है कि यह उपन्यास सांप्रदायिक तनावों, धार्मिक अस्मिता और राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान हाशिए पर पड़े समुदायों के अनुभवों को किस प्रकार चित्रित करता है। लेख में 'लज्जा' की लोकप्रियता, समालोचनात्मक प्रतिक्रियाएं, साहित्यिक बहस और आंदोलन से जुड़े सार्वजनिक विचारों और सामाजिक चर्चाओं पर इसके संभावित प्रभाव का भी अध्ययन किया गया है।

'लज्जा' को शामिल करने के पीछे तर्क:

'लज्जा' का समावेश इस शोध को गहराई और दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह ऐतिहासिक घटनाओं के मानवीय प्रभाव को उजागर करने, बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के अनुभवों को सामने लाने, सामाजिक बहसों का विश्लेषण करने और साहित्य के लेंस के माध्यम से इतिहास का गंभीर रूप से मूल्यांकन करने का कार्य करता है।

मीडिया कवरेज का बांग्लादेशी समाज पर प्रभाव:

राम जन्मभूमि आंदोलन की मीडिया में दिखाई गई तस्वीरों ने बांग्लादेशी समाज पर गहरा प्रभाव डाला। इससे कई तरह की प्रतिक्रियाएँ और परिणाम सामने आए। तसलीमा नसरीन लिखती हैं- "सीएनएन टीवी पर बाबरी मस्जिद तोड़े जाने का दृश्य दिखा रहा है।" "आज के सभी अखबरों की बैनर हेडिंग है-बाबरी मस्जिद का ध्वंस, विध्वस्त।"

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

"क्या टीवी कुछ कह रहा है, मंदिरों का टूटना दिखा रहा है? अरे नहीं! टीवी देखने से तो लगता है कि यह देश सांप्रदायिक सद्भावना का देश है। इस देश में दंगा वगैरह कुछ नहीं हो रहा है, जो कुछ हो रहा है वह भारत में ही हो रहा है।"

बढ़ती चिंता और डर: मीडिया में दिखाई गई हिंसा और संघर्ष की खबरों ने बांग्लादेश में लोगों के मन में, विशेष रूप से धार्मिक अल्पसंख्यकों में, चिंता और भय बढ़ा दिया। इससे सामाजिक तनाव बढ़ा, दंगे हुए जिसके कारण हिंदू प्रभावित हुए और असुरक्षित महसूस करने लगे। तसलीमा नसरीन लिखती हैं- "टेलीविजन के सामने सुधामय और किरणमयी स्तभित बैठे हैं। वे सोच रहे हैं कि सन् 1990 के अक्टूबर की तरह, इस बार भी सुरंजन किसी मुसलमान के घर पर उन्हें छिपाने ले जायेगा।"

द टेलीग्राफ, ढाका से फरीद हुसैन के समाचार में लिखता है "IA office in Dhaka set on fire| FROM FARID HOSSAIN| Dhaka, Dec. 7: The destruction of the Babri Masjid triggered a violent backlash in Bangladesh today with frenzied mobs attacking temples, torching Indian establishments and vandalising Hindu shops. Angry crowds mainly from Muslim extremist groups set fire to the Indian Airlines office in Moti jheel commercial area, an Indian-high commission library in central Dhaka and ransacked Dhaka's oldest temple Dhakeswari mandir. The India Bangladesh SAARC cricket match had to be abandoned after a 5,000-strong mob attacked the stadium."

द स्टैटसमैन लिखता है कि "Dhaka, Chittagong observe hartal | DHAKA, Dec 8. - Life was paralyzed in Dhaka and Chittagong today in response to a dawn to dusk hartal called to protest against the demolition of Babari mosque and to press the demand for the trial of fundamentalist Jamaat-e-Islami leader, Professor Golam Azam, as a war criminal, reports PTI. … In the capital city of Dhaka all vehicular traffic went off the road. Educational institutions, shopping centres and commercial establishments were closed down. However, Government offices were open with a thin attendance. Sporadic clashes were re- ported from different parts of the city in which several per- sons were injured."

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण में वृद्धि: हिंदू-मुस्लिम मतभेदों पर मीडिया के ज़ोर ने पहले से मौजूद सांप्रदायिक तनावों को और बढ़ा दिया। इससे अलग-अलग धर्मों के बीच आपसी मतभेद और बढ़ गए। द स्टैटसमैन लिखता है कि "Dhaka, Chittagong observe hartal | DHAKA, Dec 8. - ….Supporters of Nirmul Committee and Jamaat-e-Islami clashed at Farm Gate and Purana Paltan area, but police swung into action and lobbed tear-gas shells to disperse the warring supporters."

द टाईम्स लिखता है "Muslim world seethes over India mosque destruction | BY CHRISTOPHER THOMAS IN LUCKNOW AND OUR FOREIGN STAFF | THE destruction of the 16th century Ayodhya mosque has sent a wave of anger round the Muslim world, triggering riots, widespread destruction and threats to Indian businesses and property, particularly from India's

Muslim neighbours. … In Dhaka, one person was killed and 100 injured as thousands of protesters filled the streets of the Bangladeshi capital yesterday shouting Allahu Akbar (God is great) and denouncing India. The victim was shot dead by police in front of the city's main mosque as the protesters at tacked shops and government buildings. They also fired tear gas at 5,000 radicals who threatened to storm the Indian high commission building in west Dhaka. Communal disturbances broke out in Bangladesh's southern port cities of Chitta- gong and Khulna where there are large Hindu communities. Temples were attacked and Hindu businesses ransacked."

द स्टैटसमैन लिखता है कि "Temples set on fire, Indian Mission in Dhaka damaged | MUSLIMS angry at the demolition of the Babari Masjid attacked temples in Pakistan, Bangladesh and England, set fire to an Indian Airlines' office and damaged the Indian High Com- mission in Dhaka on Monday as the 50-member Organization of Islamic Countries condemned the Ayodhya incident as "shameful", reports PTI. Thirty temples in Pakistan and another in the north-central Eng- land city of Derby were set on fire and in Bangladesh several temples and Hindu-owned shops were damaged by mobs which fought pitched battles with the Bangladeshi police."

द टेलीग्राफ लिखता है कि "General strike in Dhaka | FROM FARID HOSSAIN | Dhaka, Dec. 8: Police fired rub ber bullets and burst teargas shel Is to contain a fresh wave of mob attacks on Dhaka's main Dhakeswari mandir today as Bangladesh was crippled by a general strike called to protest against the demolition of the Babri Masjid in Ayodhya. Thousands of enraged funda mentalist Muslims repeatedly tri- ed to storm the temple in old Dhaka but were driven away by riot police and paramilitary troops. The day-long clashes around the temple left at least 50 people injured, including some policemen. … Across the country, mobs attacked temples, burned Hindu homes and shops and looted property. At least 100 people were injured during the strike today in Dhaka and other parts of the country. This raised to over 500 the number of people injured during in past two days. Reports said a Hindu slum was set on fire in Dhaka's Jatrabari area this morning, but the blaze was controlled before much dam age occurred. In scattered violence across the capital city, Muslim fundamentalists and secular Opposition political groups fought pitched battles, which left at least eight people injured In the worst incident on the southern offshore island of Kutubdia, nearly 7,000 Hindus have become homeless after mobs set mud-and-straw huts and temples on fire. There were only 14 police-

The Asian Thinker

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

men on the island to tackle about 4,000 attackers of the Hindu population, who are mainly fishermen. Extensive damage to temples was also reported from Cox's Bazar, Chittagong, Manik ganj, Savar, Pabna, Sirajganj, Comilla, Khulna, Jamalpur and Mymensingh. ”

गलत जानकारी और पूर्वाग्रह: मीडिया की खबरों में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और सही जानकारी की कमी के चलते कुछ समुदायों के प्रति गलत जानकारी और पूर्वाग्रह फैल गए। इससे सामाजिक विभाजन और अविश्वास और भी बढ़ गया। द टेलीग्राफ लिखता है कि “General strike in Dhaka | FROM FARID HOSSAIN | Dhaka, Dec. 8: … At a special Cabinet meeting last night, the Prime Minister, Begum Khaleda Zia, described the destruction of the Babri Masjid as a most heinous act, unprecedented in the history of civilisation. But she warned against arson and chaos and said her government law-breaking. would resist.”

इस शोध से यह पता चलता है कि राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान मीडिया ने बांग्लादेश में जनमत बनाने और सामाजिक परिवर्तनों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मीडिया के पास जानकारी देने और शिक्षित करने की क्षमता है, लेकिन यह किसी घटना को गलत तरीके से भी दिखा सकता है और मौजूदा सामाजिक विभाजन को बढ़ा सकता है। इसीलिए मीडिया को आलोचनात्मक दृष्टि से देखना और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

तस्लीमा नसरीन का "लज्जा": एक अलग दृष्टिकोण

तस्लीमा नसरीन का उपन्यास "लज्जा" राम जन्मभूमि आंदोलन पर मीडिया द्वारा प्रस्तुत एकतरफा और सनसनीखेज कवरेज का एक प्रमुख काट (counter-narrative) है। यह उपन्यास हिंसा के चश्मे से परे देखकर, सामाजिक और मानवीय पहलुओं को उजागर करता है, जो अकसर मीडिया द्वारा नजरअंदाज किए जाते हैं।

उपन्यास के प्रमुख विषय:

व्यक्तिगत अनुभव: "लज्जा" इस आंदोलन से प्रभावित लोगों के निजी अनुभवों पर केंद्रित है। उनके डर और संघर्षों को दर्शाते हुए, नसरीन इस आंदोलन के प्रभाव को मानवीय दृष्टिकोण से समझने में मदद करती हैं। “जुलूस घर के सामने से गुजर रहा था तब उसका नारा स्पष्ट सुनाई दे रहा था- 'एक-दो हिंदू धरो, सुबह-शाम नाश्ता करो।' सुरंजन ने देखा सुधामय कांप गये।” “सुरंजन ज्योंही रास्ते में निकला सुनकर हैरान हो गया कि मुहल्ले के एक झुण्ड लड़के लड़के जिनकी उम्र यही कोई बारह से पंद्रह के बीच होगी, उसके घर से थोड़ी दूर पर खड़े थे, उसे देखकर चिल्ला उठे, हिंदू है, 'पकड़ो-पकड़ो!' सात वर्षों से वह उन लड़कों को देख रहा है।-”

“पुलक के माथे पर बूंद-बूंद पसीना जमा है। इतनी ठंड में भी पसीना क्यों आता है? सुरंजन ने अपने माथे पर हाथ रखा। वह हैरान हुआ कि उसके भी ललाट पर पसीना जम गया है। क्या डर से? कोई भी उनको घर के अंदर पीट नहीं रहा है। हत्या नहीं कर रहा है। फिर भी क्यों डर समाया है? क्यों दिल की धड़कन तेज है?”

“बांग्ला फाइव मांगने पर दुकानदार सुरंजन के चेहरे की तरु हैरान होकर देखता है। उसे इस तरह से देखता हुआ देखकर छाती में फिर से धुकधुकी होने लगती है/ क्या हय आदमी जान गया है कि वह हिंदू का लड़का है। क्या हय आदमी जानता है कि बाबरी मस्जिद टूट गयी है इसलिए किसी भी हिंदू को इच्छा होने पर पीटा जा सकता है? ... टिकाटुली के

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

मोड़ पर आते ही एक कुत्ता भौकने लगा। वह चौक गया। अचानक पीछे से एक झुंड लड़कों की पकड़ो-पकड़ो की अवाज सुनाई पड़ी। यह सुनकर वह फिर पीछे नहीं मुड़ा। बेतहाशा भागता रहा। उसका शरीर पसीना-पसीना हो रहा था। कमीज की बटन खुल गई है, फिर भी दौड़ता रहा। काफी दूर तक दौड़ने के बाद पीछे मुड़कर देखा तो वहां कोई नहीं था। तो क्या वह व्यर्थ ही दौड़ता रहा। वह आवाज उसके लिए नहीं थी? या फिर यह उसका ऑडिटर हैलुशिलेनशन है।"

"मीर सराय के वासुदेव से जब पूछा गया कि गांव पर किन लोगों ने हमला किया तो वासुदेव ने कहा 'रात में जो लोग मारते हैं, दिन में वही सहानुभूति जताते हुए कहते हैं- तुम लोगों के लिए दिल रोता है'।"

संघर्ष का मानवीय पक्ष: उपन्यास सांप्रदायिक हिंसा के विनाशकारी मानवीय पक्ष को दर्शाता है। पीड़ितों के दर्द एवं व्यक्तियों और परिवारों पर पड़ने वाले आघात पर विशेष ध्यान देते हुए, यह मीडिया कवरेज से भिन्न है जो अकसर इन पहलुओं को नजरअंदाज करता है। "भोला की तो बहुत बुरी स्थिति है। तजमुद्दीन, बुरहानुद्दीन थाने के गोलकपुर, छोटा डाउरी, शम्भूपुर, दासेर हाट, खासेर हाट, दरिरामपुर, पद्मामन और मणिराम गांव के दस हजार परिवारों के करीब पचास हजार हिंदुओं का सब कुछ लुट गया। ... बेघर लोग इस प्रचंड ठंड में खुले आकाश के नीचे दिन बिता रहे हैं। शहर के मदनमोहन ठाकुरबाड़ी, मंदिर, लक्ष्मीगोविंद ठाकुरबाड़ी उसका मंदिर महाप्रभु अखाड़ा को भी लूटकर आग लगा दी। बुरहानुद्दीन, दौलतखान, चरफैशन, तजमुद्दीन व लालमोहन थाने के किसी भी मंदिर, किसी भी अखाड़े का कोई अस्तित्व नहीं हे। सभी घरों में लूट हुई है, आग लगाई गई है। धुइन्या हाट इलाके में करीब दो मील तक स्थित हिंदुओं के घरों को आग लगा दी गई।"

"किरणमयी के दरवाजा खोलते ही अचानक सात युवक धड़ाम से अंदर घुसे उनमें से चार के हाथों में मोटी-मोटी लाठियां थीं, बाकी के हाथों में क्या है, यह देखने से पहले ही वे किरणमयी को लांघते हुए अंदर घुसे। उनकी उम्र इक्कीस-बाईस की होगी। दो के माथे पर टोपी थी, पाजामा-कुर्त्ता पहने हुए थे। बाकी तीन पैंट-शर्ट में थे। वे अंदर घुसकर किसी से कुछ बोले बिना टेबल, कुर्सी, कांच की अलमारी, टेलीविजन, रेडियो, बर्तन, किताब, कापी, ड्रेसिंग टेबल, कपड़ा-लत्ता, पैडैस्टल फैन, जो कुछ भी सामने मिला, उन्मादी की तरह तोड़ने लगे। सुधामय ने उठकर बैठना चाहा लेकिन नहीं उठ सके। माया पिताजी कहकर चीख पड़ी। किरणमयी दरवाजा पकड़कर स्तब्ध खड़ी थी। कितना वीभत्स दृश्य था। एक ने कमर से कटार निकालकर कहा, साला, बाबरी मस्जिद तोड़ा है। सोचते हो, तुम्हें जिंदा छोड़ूंगा?...कोई कुछ समझ पाये, इससे पहले माया भी जड़ स्तब्ध खड़ी थी। अचानक वह चिल्ला पड़ी, जब उनमें से एक ने उसका हाथ पकड़कर खींचा। किरणमयी भी अपने धैर्य का बांध तोड़ती हुई आर्तनाद कर उठी। सुधामय सिर्फ कराह रहे थे। उनके मुंह से कोई शब्द नहीं निकल पाया। अपनी आंखों के सामने उन्होंने देखा कि माया को वे लोग खींच रहे हैं। माया पलंग की पाटी पकड़कर उनसे छूटने की कोशिश कर रही है। किरणमयी दौड़कर आने दोनों हाथों से माया को पकड़ती हैं। उन दोनों की शक्ति, दोनों के आर्तनाद को चीरकर वे माया को खींचकर ले गये। किरणमयी उनके पीछे-पीछे दौड़ी। चिल्लाकर कहती रही, बेटा उसे छोड़ दो। मेरी माया को छोड़ दो। ... भागती हुई बेबी टैक्सी के पीछे-पीछे वह दौड़ती रही। जो भी राह चलते मिला, कहती, मेरी बेटी को पकड़कर ले जा रहे हैं, जरा देखिए न, देखिए न, भैया! चौक की दुकान पर किरणमयी रुकती है। बाल खुले हुए, नंगे पांव, किरणमयी मोती मियां से बोली, जरा देखिएगा भैया, अभी-अभी कुछ लोग मेरी बेटी माया

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

को उठा ले गये हैं, मेरी माया को! सभी सहज ढंग से किरणमयी को देखते हैं। मानो कोई रास्ते की पगली हे जो अनाप-शनाप बोल रही है। किरणमयी दौड़ती रही। ”

धार्मिक सहिष्णुता का क्षरण: "लज्जा" समाज में धार्मिक सद्भाव के टूटने और असहिष्णुता के उदय को दर्शाता है। यह मीडिया कवरेज को चुनौती देता है जो केवल धार्मिक संघर्ष को हिंसा का कारण बताता है। “जमीन पर पड़ा पुलक का छह वर्षीय लड़का सुबह-सुबह कर रो रहा है। पुलक से पूछने पर उसने बताया कि बगल से फ्लैट के बच्चे जिनके साथ वहखेलता था, आज से अलक को खेल में शामिल नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि ‘हम तुम्हारे साथ नहीं खेलेंगे। हुजूर ने हिंदुओं के साथ खेलने से मना किया है’ । हुजूर मतलब? सुरंजन ने पूछा। हुजूर यानी मौलवी जो सुबह उन लोगों को अरबी पढ़ाने आता है। ”

महिलाओं और अल्पसंख्यकों पर प्रभाव: उपन्यास सांप्रदायिक तनाव के दौरान हिंदू महिलाओं और हिंदुओं की कमजोर स्थिति पर प्रकाश डालता है। यह मीडिया कवरेज से भिन्न है जो अकसर उनकी आवाज़ों को हाशिए पर रखता है। “... दस मंदिरों को और अठारह हिंदू घरों को लूट कर जला दिया गया। जिसमें एक दुकान, एक गाड़ी और एक महिला भी जल गई। भावर्दी के सत्रह मकानों में से तेरह को लगाकर राख बना दिया गया। हर घर को लूटा गया और महिलाओं के साथ बलात्कार हुआ।... ... कल विराहिमपुर के सभी घर व मंदिर उनकी चपेट में आये हैं। इतना ही नहीं, जगन्नाथ मंदिर, चरहाजीरी गांव की तीन दुकानें व क्लब को भी लूटा और तोड़ा गया। चरपार्वती गांव के दो मकान, दासेर हाट का एक मकान, चरकुकरी और मुछारपुर के दो मंदिर, व जयकाली मंदिर को भी जला दिया गया। सिराजपुर के प्रत्येक व्यक्ति को पीटा गया, हर घर को लूटा गया और अंत में उन घरों को जला दिया गया।”

“...मानिक गंज शहर और घिउर थाने के इलाके में सौ से भी अधिक घरों को लूटकर आग लगा दी गई है। पच्चीस मंदिरों को तोड़कर जला दिया गा। बक्झुड़ी गांव के हिंदुओं के मकानों को जला दिया गया। आधी रात में आठ-दस युवक देवेन सूर के घर में घुसकर उसकी बेटी सरस्वती को उठा ले गये फिर बलात्कार किया” “इधर गोलकपुर में तीस हिंदू लड़कियों के साथ बलात्कार किया गया, चंचली, संध्या मणि...। निकुंज दत्त की मौत हो गई है। भगवती नाम की एक वृद्धा की, डर के मारे दिल की धड़कन रुक जाने से मौत हो गयी, गोलकुपर में दिन के उजाले में बलात्कार की घटना घटी है। मुसलमानों के घर में आश्रय लेने वाली लड़कियों तक की इज्जत लूटी गई।”

"लज्जा" और मीडिया:

सनसनीखेजता से परे: जहां मीडिया दंगों, राजनीतिक झड़पों और धार्मिक स्थलों के विध्वंस पर ज़ोर देता है, "लज्जा" स्थायी जख्मों को उजागर करता है। यह विस्थापन, पहचान का नुकसान, और मनोवैज्ञानिक आघात जैसे विषयों को गहराई से दर्शाता है।

सामान्य बनाम विशेष: "लज्जा" धर्म-प्रेरित संघर्ष के सतही लेंस से परे, राजनीतिक हेरफेर, आर्थिक असमानताएं और ऐतिहासिक शिकायतों जैसे प्रमुख पहलुओं को उजागर करता है।

हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़: "लज्जा" महिलाओं, हिंदु अल्पसंख्यकों और आम नागरिकों की आवाज़ों को मजबूती देता है। यह उन्हें एक मंच प्रदान करता है जो मीडिया कवरेज में अकसर नजरअंदाज किया जाता है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पक्षपाती कवरेज के परिणाम: "लज्जा" भारत पर केंद्रित मीडिया कवरेज के पक्षपाती प्रभावों को दर्शाता है, जो बांग्लादेश में भय और असंतोष को बढ़ावा देता है।

साहित्य की शक्ति:

"लज्जा" साहित्य की शक्ति का प्रमाण है जो वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है और जटिल सामाजिक मुद्दों की हमारी समझ को गहरा करता है। यह उपन्यास हमें असहज सच्चाइयों से जूझने के लिए प्रेरित करता है और हमें साधारण मीडिया चित्रण से परे देखने में मदद करता है।

लज्जा: मीडिया के विमर्श को चुनौती

'लज्जा' 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद बांग्लादेश में हुए हिंदू विरोधी दंगों पर आधारित है। यह उपन्यास उन कई तरीकों से मीडिया के द्वारा गढ़े जा रहे विषयों को चुनौती देता है जिनसे वह संघर्षों को प्रस्तुत करता है।

संघर्ष को मानवीय स्वरूप देना: मीडिया अकसर राजनीतिक हस्तियों और बड़े विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन 'लज्जा' आम लोगों के जीवन पर केंद्रित है। यह दर्शाता है कि दंगे कैसे वास्तविक लोगों को प्रभावित करते हैं, उनके परिवारों को तोड़ते हैं और उन्हें विस्थापित करते हैं। यह मीडिया के सनसनीखेज चित्रण के विपरीत, हिंसा का एक अमानवीय चेहरा प्रस्तुत करता है।

सतही धार्मिक नैरेटिव पर सवाल उठाना: मीडिया अकसर सांप्रदायिक संघर्षों को धार्मिक घृणा के टकराव के रूप में प्रस्तुत करता है। 'लज्जा' इस विषय को चुनौती देता है और दिखाता है कि कैसे राजनीतिक जोड़-तोड़, ऐतिहासिक अन्याय और सामाजिक-आर्थिक असमानताएं भी इन संघर्षों में योगदान देती हैं।

पूर्वाग्रह का पर्दाफ़ाश करना: मीडिया रिपोर्टिंग अकसर रूढ़िवादिता और समूहों को दोष देने की प्रवृत्ति का शिकार हो जाती है। 'लज्जा' पूर्वाग्रह और कट्टरता की जड़ों को उजागर करता है और दिखाता है कि कैसे ये व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक वातावरण और कहानियों से पैदा होते हैं जो हम पीढ़ी दर पीढ़ी सुनते हैं।

हाशिए पर पड़े लोगों का आवाज़ बनना: मुख्यधारा के मीडिया में हाशिए पर पड़े समुदायों को अकसर 'पीड़ित' या 'उपद्रवी' के रूप में दिखाया जाता है। 'लज्जा' उनकी विशिष्ट चुनौतियों, उनके लचीलेपन और समाज को फिर से जोड़ने में उनकी भूमिका को सामने लाता है।

'लज्जा' हमें मीडिया में प्रस्तुत जाने वाले विषयों से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें मानव अनुभव की बारीकियों को समझने और उन कहानियों के प्रति अधिक सचेत होने में मदद करता है जो समाज में मौजूद विभाजन और पूर्वाग्रहों को आकार देती हैं.

तुलनात्मक विश्लेषण

अभिसरण और विचलन

मीडिया कवरेज और 'लज्जा' दोनों राम जन्मभूमि आंदोलन के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करते हैं। दोनों हिंसा, सामाजिक सद्भाव पर प्रभाव, और धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर ध्यान देते हैं। मीडिया कवरेज हमें घटनाओं का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जबकि 'लज्जा' हमें उन लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों को समझने में मदद करता है जो इस संघर्ष से प्रभावित थे।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भिन्न दृष्टिकोण

हालांकि, दोनों के दृष्टिकोणों में महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। मीडिया इस आंदोलन को राजनीतिक घटनाओं के चश्मे से देखता है, जबकि 'लज्जा' व्यक्तिगत अनुभवों और संघर्ष की मानवीय पक्ष पर केंद्रित है। मीडिया सरलीकृत व्याख्याएं प्रस्तुत करता है और ऐतिहासिक संदर्भ को अनदेखा करता है, जबकि 'लज्जा' इस आंदोलन के पीछे निहित जटिल सामाजिक-राजनीतिक कारकों का पता लगाता है। मीडिया रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों को पुष्टि करता है, जबकि 'लज्जा' मुख्यधारा के नैरेटिव को चुनौती देता है और हाशिए के समुदायों को आवाज़ देता है।

तमाशा बनाम निशान

मीडिया इस आंदोलन को सनसनीखेज तरीके से पेश करता है, हिंसा और प्रदर्शनों पर ध्यान केंद्रित करता है। 'लज्जा' उन अदृश्य घावों और स्थायी मानसिक आघातों को उजागर करता है जो हिंसा के कारण होते हैं। यह उपन्यास विस्थापन, पहचान के दर्दनाक नुकसान, और मानसिक परेशानियों के विषयों की खोज करता है।

सतहीपन बनाम सार्थकता

मीडिया इस आंदोलन को एक धार्मिक संघर्ष के रूप में पेश करता है। 'लज्जा' ऐतिहासिक शक्ति असंतुलन, राजनीतिक छल, आर्थिक असमानताएं, और उपनिवेशवाद की जटिल विरासत जैसे मुद्दों को उजागर करता है।

शक्तिशाली बनाम शक्तिहीन

मीडिया राजनेताओं और धार्मिक हस्तियों जैसे प्रभावशाली लोगों की आवाज़ को ज़्यादा महत्व देता है। 'लज्जा' आम लोगों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों, मजदूर वर्ग के नागरिकों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो अकसर मीडिया में उपेक्षित होते हैं।

सीमा पार परिणाम

मीडिया का ध्यान मुख्यतः भारत पर होता है, जबकि 'लज्जा' यह दिखाती है कि मीडिया रिपोर्टिंग पड़ोसी देश बांग्लादेश को कैसे प्रभावित कर सकती है।

साहित्य की स्थायी शक्ति

'लज्जा' संघर्षों के जटिल मानवीय आयाम को संबोधित करने में पारंपरिक पत्रकारिता की सीमाओं को उजागर करता है। यह हमें साधारण मीडिया चित्रण से परे देखने और उन असहज सच्चाइयों से जूझने के लिए प्रेरित करता है जिन्हें वे शायद अस्पष्ट कर देते हैं।

निष्कर्ष:

इस शोध से पता चलता है कि राम जन्मभूमि आंदोलन पर मीडिया की रिपोर्टिंग ने बांग्लादेशी समाज पर गहरी छाप छोड़ी है, जैसा कि तसलीमा नसरीन ने अपने उपन्यास 'लज्जा' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मीडिया कैसे लोगों की सोच और समाजिक नजरिये को बदल सकता है, इस पर यह अध्ययन प्रकाश डालता है। जब मीडिया घटनाओं को संतुलित और सटीक तरीके से नहीं दिखाता, तो यह समाज में विभाजन बढ़ा सकता है। मीडिया कवरेज, नसरीन के 'लज्जा' का विश्लेषण करके और तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर, अध्ययन निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुंचता है:

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

मीडिया का प्रभाव: शोध इस बात की पुष्टि करता है कि मीडिया जनता की राय और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बांग्लादेश में लोगों की सोच और सामाजिक माहौल को बदलने में मीडिया की बड़ी भूमिका है। यह दिखाता है कि मीडिया द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली चीजों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। लोगों को अलग-अलग दृष्टिकोण रखना भी जरूरी है जिससे आपसी समझ बढ़े और अलग-अलग धर्मों के बीच सामंजस्य हो। शोध इस बात पर ज़ोर देता है कि किसी भी घटना को सही से समझने के लिए अलग-अलग स्त्रोंतों से जानकारी प्राप्त करना बहुत ज़रूरी है। इससे हम किसी घटना के बारे में सहती और एकतरफा सोच से आगे बढ़ पाते हैं। राम जन्मभूमि आंदोलन जैसी जटिल घटनाओं को समझने के लिए तो यह और भी ज़रूरी है।

बढ़ता तनाव: एकतरफा और सनसनीखेज मीडिया रिपोर्टिंग ने बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों (हिंदूओं) की चिंताएं बढ़ा दीं। इससे समाज में पहले से मौजूद धार्मिक तनाव और भी बढ़ गया। पक्षपाती और सनसनीखेज मीडिया कवरेज समाज में मौजूद तनावों और चिंताओं को बढ़ा सकता है, जिससे सामाजिक विभाजन और पूर्वाग्रहों को बल मिल सकता है। यह गैर-जिम्मेदार मीडिया प्रथाओं के खतरों को रेखांकित करता है और नैतिक पत्रकारिता की आवश्यकता पर ज़ोर देता है जो ज़िम्मेदारीपूर्ण रिपोर्टिंग और विभिन्न दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

साहित्य की भूमिका: 'लज्जा' उपन्यास इस बात की याद दिलाता है कि किसी भी संघर्ष में आम इंसान पर क्या बीतती है, इस पर ध्यान देना कितना जरूरी है। इंसानों के अनुभवों पर ध्यान देने से हमें किसी घटना के असली असर को सही तरह से समझने में मदद मिलती है। साहित्य और वैकल्पिक सूचनाएं प्रमुख मीडिया कवरेज को चुनौती दे सकते हैं। और संघर्ष के मानवीय पहलू को गहन समझ प्रदान कर सकते हैं। व्यक्तिगत अनुभवों और विविध दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर, हम सतही कवरेज से आगे बढ़ सकते हैं और जटिल सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों की अधिक व्यापक समझ प्राप्त कर सकते हैं।

पूर्वाग्रहों से लड़ना और सहिष्णुता को बढ़ावा देना: सहिष्णुता को बढ़ावा देने और भविष्य में होने वाले झगड़ों को रोकने के लिए उन सामाजिक व राजनीतिक कारणों को समझना जरूरी है जिनकी वजह से समाज में तनाव बढ़ता है। इसके लिए लगातार कोशिशें करनी होंगी ताकि पूर्वाग्रह और भेदभाव खत्म हो, अलग-अलग धर्मों के बीच सामंजस्य बढ़े, और सब एक दूसरे को समझें और उनका सम्मान करें। इसके लिए अंतर-धार्मिक संवाद, विभिन्न समुदायों के प्रति समझ और सम्मान को बढ़ावा देने, और एक अधिक समावेशी और सहिष्णु समाज के निर्माण के लिए अथक प्रयासों की आवश्यकता है।

भविष्य की शोध हेतु सुझाव:

राम जन्मभूमि आंदोलन का बांग्लादेश में अंतर-धार्मिक संबंधों और सांप्रदायिक तनाव पर लंबे समय तक क्या प्रभाव रहा है? इस विषय पर और शोध किया जा सकता है।

विभिन्न देशों में इस आंदोलन के मीडिया कवरेज का तुलनात्मक अध्ययन सांस्कृतिक संदर्भों और राजनीतिक एजेंडों के प्रभाव को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है।

सांप्रदायिक तनाव की अवधि के दौरान सामाजिक परिवेश को आकार देने और प्रभावित करने में सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की भूमिका डिजिटल युग में महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक और धार्मिक सीमाओं को पार करके समझ बढ़ाने, सहानुभूति बढ़ाने और बातचीत को प्रोत्साहन देने के लिए साहित्य और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों की क्षमता का पता लगाया जा सकता है।

संदर्भ सूचि:

Associated Press. (1992, December 7). Bangladesh reacts to Babri Masjid demolition. AP News Archive.

Entman, R. M. (1993). Framing: Toward clarification of a fractured paradigm. Journal of Communication, 43(4), 51-58.

Essed, P. (1994). Understanding everyday racism: An interdisciplinary theory. Sage Publications.

Haq, M. S. (2004). The silencing of Taslima Nasrin: Gender, Islam, and the nation. In Women and the Politics of Culture in Contemporary Asia (pp. 177-203). Routledge.

Hossain, F. (1992, December 7). A office in Dhaka set on fire. The Telegraph. Retrieved from https://books.google.co.in/books?id=rJlKAAAAIBAJ&pg=PA27

Karim, J. (2007). Narratives of the nation: Representations of communal violence and the construction of the Hindu citizen in postcolonial India. International Journal of Intercultural Studies, 10(2), 133-150.

Karim, W. J. (2011). News as narrative: The framing of the Iranian Revolution in the American press. Routledge.

McManus, J. H. (1994). Market-driven journalism and the construction of reality. In Media in global context: A reader (pp. 217-230). Sage Publications.

Nāsarina, T. (2007). लज्जा. India: वाणी प्रकाशन.

Rahman, A. (1992, December 8). Protests erupt in Dhaka over Ayodhya incident. The Daily Star.

Rahman, T. (2003). The politics of fear: Communalism and the media in Bangladesh. Economic and Political Weekly, 1127-1130.

Robinson, P., & Sreberny-Mohammadi, A. (1992). Global television and the politics of culture. Sage Publications.

Said, E. W. (2001). Covering Islam: How the media and the experts determine our perception of the Muslim world. Random House.

The Asian Thinker

Shoemaker, P. J., & Reese, S. D. (1996). Mediating the message: Theories of influences on mass media content (2nd ed.). Longman.

The Statsman. (1992, December 8). Dhaka, Chittagong observe hartal. The Statsman.

Thomas, C. (1992, December 7). Muslim world seethes over India mosque destruction. The Times. Retrieved from https://books.google.co.in/books?id=o5lFAAAAIBAJ&pjg=PA2

Thussu, D. K. (2007). News as a global commodity: International news production, consumption and trade. Routledge.

The Asian Thinker